



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)
PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 508]
No. 508]

नई दिल्ली, मंगलवार, नवम्बर 20, 1990/कार्तिक 29, 1912
NEW DELHI, TUESDAY, NOVEMBER 20, 1990/KARTIKA 29, 1912

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

नागर विमानन मंत्रालय

प्राकृष नियम

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 नवम्बर, 1990

सा. का. नि. 918 (अ):—वायुयान नियम, 1937 का और संशोधन करने के लिए कनिष्ठ नियमों का निम्नलिखित रूप जिसे केन्द्रीय सरकार वायुयान अधिनियम, 1934 (1934 का 22) की धारा 5 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाना चाहती है, उक्त अधिनियम की धारा 14 की अपेक्षातुसार ऐसे सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है जिनका उनसे सम्बन्ध होने की संभावना है और इसके द्वारा यह सूचना दी जाती है कि उक्त प्राकृष नियमों पर उस तारीख से, जिस तारीख को उक्त राजपत्र की प्रतियाँ जिनमें यह अधिसूचना प्रकाशित की गई है, जनता को उपलब्ध करा दी गई है, 45 दिन की अवधि की समाप्ति के पश्चात् विचार किया जाएगा।

2 किन्हीं ऐसे आक्षेपों या सुझावों पर, जो ऊपर विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति के पहले उक्त नियमों की श्रद्धा किसी व्यक्ति से प्राप्त होगे, केन्द्रीय सरकार विचार करेगी।

1. इन नियमों का संक्षिप्त नाम वायुयान (—)संशोधन नियम, 1990 है:—

2. वायुयान नियम, 1937 में नियम 61 के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात्:—

61. वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों का अनुज्ञापन

(1) नियम 54 के प्रयोजन के लिए, केन्द्रीय सरकार व्यक्तियों को, वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरों, प्राधिकृत या अनुमोदित व्यक्तियों की हैसियत में कार्य करने और वायुयान के सन्निर्माण, मरम्मत, ओवरहालिंग, और अनुरक्षण के संबंध में उन प्रमाणपत्रों पर, जो इन नियमों के अधीन महानिदेशक द्वारा विहित किए जाएं या अपेक्षित हों, हस्ताक्षर करने के लिए अनुज्ञापितथा, प्राधिकार पत्र और अनुमोदन प्रदान कर सकेगी।

(2) माधारण अपेक्षाएं

(अ) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति जारी किए जाने के लिए प्रत्येक आवेदक निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूरा करेगा:—

(क) आवेदक की आयु 21 वर्ष से कम नहीं होगी।

(ख) आवेदक ने भौतिकी और गणित के साथ 10+2 परीक्षा या इंजीनियरी की किसी शाखा में तीन वर्ष का डिप्लोमा या इंजीनियरी की किसी शाखा में डिग्री या समतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण की हो ;

(ग) आवेदक के पास वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरी के क्षेत्र में कम से कम 4 वर्ष का व्यवहारिक अनुभव होना चाहिए ।

परन्तु केन्द्रीय सरकार इंजीनियरी स्नातकों के लिए न्यूनतम अपेक्षा में निम्नलिखित छूट दे सकती यदि वे सुसंगत प्रयोगों में वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर अनुज्ञप्ति परीक्षा में सम्मिलित होते हैं ;

- (1) एयर फ्रेम और इंजनों के प्रयोगों में ऐसे इंजीनियरी स्नातकों के लिए 18 मास जिनके पास वैमानिक इंजीनियरी की डिग्री हो,
- (2) ऐसे इंजीनियरी स्नातकों के लिए 12 मास जिनके पास यांत्रिकी और विद्युत इंजीनियरी की डिग्री हो,
- (3) सुसंगत प्रयोगों में ऐसे इंजीनियरी स्नातकों के लिए 12 मास जिनके पास इलेक्ट्रॉनिकी दूर संचार इंजीनियरी या अन्य सहबद्ध शाखाओं में डिग्री हो ।

परन्तु यह और कि केन्द्रीय सरकार वैमानिक/यांत्रिक/या विद्युत/इलेक्ट्रॉनिकी इंजीनियरी की डिग्री देने वाली संस्थाओं के ऐसे विद्यार्थियों को सामान्य परीक्षा पत्रों से छूट दे सकती जिन्होंने अपने पाठ्यक्रम के दौरान वायुयान नियम, साधारण इंजीनियरी और कर्मशाला पद्धति, उड़यन के सिद्धांत, वायुयान संरचना, अंतर्दहन इंजनों के सिद्धांत वुन-यायी इलेक्ट्रॉनिकी, वुनियादी संचार प्रणाली, विद्युत प्रणाली और वायुयान उपकरण प्रणाली से संबंधित पेपर उत्तीर्ण किए हों और उन पेपरों का पाठ्य विवरण सिविल विमानन महाविद्यालय द्वारा अनुमोदित हो । ऐसे विद्यार्थियों को 5700 किलोग्राम या उससे अधिक कुल भार के वायुयान/इंजनों/वायुयान प्रणाली पर 24 मास का व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् और 5700 किलोग्राम से कम के कुल भार तक के वायुयान पर 12 मास के व्यवहारिक अनुभव के पश्चात् टाइप रेडिड अनुज्ञप्ति परीक्षाओं में सम्मिलित होने की अनुज्ञा दी जा सकती ।

परन्तु यह और भी कि केन्द्रीय सरकार ऐसे आवेदकों के मामले में जो ग्लाइडरों से संबंधित अनुज्ञप्ति परीक्षा में सम्मिलित हो रहे हैं न्यूनतम अनुभव के मामले में दो वर्ष तक की छूट दे सकती ।

परन्तु यह और भी कि केन्द्रीय सरकार ऐसे आवेदकों के संबंध में अनुभव के मामले में एक वर्ष की छूट दे सकती जिन्होंने महाविद्यालय द्वारा अनुमोदित संस्थानों में प्रशिक्षण समाप्तानुप्राप्त पूरा कर लिया हो ।

(घा) किसी विशिष्ट प्रयोगों के लिए पूर्वतः विधिमानी अनुज्ञप्ति के विस्तार या अनुज्ञप्ति के विस्तार या अनुज्ञप्ति में किसी अन्य प्रयोगों को जोड़ने के लिए इच्छुक प्रत्येक आवेदक के पास उड़यन योग्यता अपेक्षाओं में महाविदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट प्रयोगों या प्रकार संबंधी पृष्ठांकन में सुसंगत अनुरक्षण अनुभव होना चाहिए ।

(3) ये संबंधित जिनकी वास्तव वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरी के लिए अनुज्ञप्तियां दी जा सकेंगी, निम्नलिखित होंगी:—

- (क) वायुयान को लागू अनुज्ञप्तियां (किन्तु इंजनों को छोड़कर जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार-II की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो) —प्रयोग क ;
- (ख) ऐसे वायुयानों की ओवरहालिंग को लागू अनुज्ञप्तियां जिनका अधिकतम कुल भार 5700 किलो ग्राम से कम है किन्तु इंजनों को छोड़कर जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार I की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो) —प्रयोग ख ;
- (ग) इंजनों को लागू अनुज्ञप्तियां (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हों) —प्रयोग ग ;

(घ) पिस्टन, ऐसे इंजनों की ओवरहालिंग को लागू अनुज्ञप्तियां (जिनका शक्ति निर्धारण 500 बी एच पी से अधिक न हो) जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार I की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो—प्रयोग घ ;

(ङ) वैद्युत प्रणाली को लागू अनुज्ञप्तियां (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो) —प्रयोग ङ ;

(ण) उपकरण प्रणालियों को जिनके संश्लेषण स्वचालित पाइलेट की है, (लागू अनुज्ञप्तियां जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो) —प्रयोग ण ;

(छ) रेडियो संचार मार्गनिर्देशन और राडार प्रणाली को लागू अनुज्ञप्तियां (जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो) —प्रयोग छ ;

(ज) एविऑनिकस प्रणाली या वायुयान को लागू अनुज्ञप्तियां जहां वैद्युत उपकरण और रेडियो प्रणालियों उक्त कंप्यूटर प्रणाली के उपयोग के साथ समाकलित है (और उड़ान नियंत्रण का संचालन तार प्रौद्योगिकी द्वारा फ्लाई पर आधारित है) जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार II की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हो) । प्रयोग ज ;

(झ) ऐसे उपकरण वैद्युत उपकरण, रेडियो उपकरण, बी. पी. नोटक और स्वचालित पाइलेटों की ओवरहालिंग को लागू अनुज्ञप्तियां जिन्हें ऐसे वायुयान में लगाया गया है (जिनका कुल भार 5700 किलोग्राम से कम हो) जो अंतर्राष्ट्रीय सिविल विमानन संगठन प्रकार I की अनुज्ञप्तियों के अनुरूप हों) —प्रयोग झ ।

(4) उपनियम (3) में अन्तर्दिष्ट किसी बात के होते हुए भी माइक्रोलाइट वायुयानों को किसी भी ऐसे वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर द्वारा प्रमाणित किया जा सकता जिसके पास, यथास्थिति, प्रयोग क, प्रयोग ख, प्रयोग ग, प्रयोग घ या प्रयोग ङ की अनुज्ञप्ति है ।

(5) अनेक वायुयान अनुरक्षण इंजीनियरी की अनुज्ञप्तियों के विशेषाधिकार निम्नलिखित होंगे :

(क) प्रयोग क, ग, ङ, 1 द और 5 की अनुज्ञप्तियों के लिए—

- (i) संबंधित प्रयोगों की अनुज्ञप्ति में पूर्णतः वायुयान, इंजन या प्रणालियों की वास्तव उड़ान विसर्जन प्रमाणन ;
- (ii) निरीक्षण, महाविदेशक द्वारा अनुमोदित अनुरक्षण अनुसूची के अधीन किया गया कार्य, महाविदेशक द्वारा अनुमोदित छोटी मरम्मत, महाविदेशक द्वारा अनुमोदित उपांतरण और संगठकों, पुर्जों का प्रतिस्थापन और संबंधित प्रयोगों की अनुज्ञप्ति से पूर्णतः वायुयान, इंजन या प्रणाली, जैसी भी स्थिति हो, की वास्तव उनके निरीक्षण का लॉगबुक में प्रमाणन ;

(ख) प्रयोग ख, घ और 10 की अनुज्ञप्तियों के लिए,—

- (i) वायुयान, इंजन, साधित्र, उपकरण या जिनका संबंधित प्रयोगों की अनुज्ञप्ति में पृष्ठांकन किया गया है की वास्तव महाविदेशक द्वारा अनुमोदित प्रतियां और तकनीक के अनुसार की गई ओवरहालिंग, मरम्मत, उपांतरण, परीक्षण या प्रतिस्थापन का प्रमाणन ;
- (ii) महाविदेशक द्वारा अनुमोदित मानचित्र के अनुसार और महाविदेशक द्वारा अनुमोदित गामग्रह और महाविदेशक द्वारा अनुमोदित स्थापना से अभिप्राप्त सामग्री से बने संगठकों और पुर्जों के सन्निर्माण का प्रमाणन, जबकि उसे अनुज्ञप्ति में विनिर्दिष्ट रूप में अपवर्जित न कर दिया गया हो ।

(6) प्राधिकार प्रमाणपत्र का जारी किया जाना :—

केन्द्रीय सरकार किसी नए वायुयान, इंजन, प्रणाली या उपकरण की किसी मॉड, जिसे भारत में लाया गया है और जो अनुज्ञप्ति की परिधि के अन्तर्गत नहीं आती की बाबत अनुरक्षण का प्रमाणपत्र या उड़ान निसर्जन प्रमाणपत्र या दोनों प्रमाणपत्र जारी करने के लिए वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की अनुज्ञप्ति के धारक को प्राधिकार प्रमाणपत्र दे सकेगी :

परन्तु ऐसा अनुमोदन तब तक प्रदान नहीं किया जाएगा जब तक कि—

- (1) केन्द्रीय सरकार का यह समाधान तभी हो जाता है कि ऐसे धारक के पास पर्याप्त प्रशिक्षण और अनुभव है, और
- (2) ऐसे धारक ने ऐसी परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और उद्भूत योग्यता अपेक्षाओं से संबंधित महानिदेशक द्वारा विनिर्दिष्ट ऐसा सख्त प्रमाणित कर दिया है ।

(7) अनुमोदन पत्र का जारी किया जाना—

केन्द्रीय सरकार किसी वायुयान, इंजन, प्रणाली संगठक, उपकरण, उपसाधन या उपस्कर की कोई मॉड जिसके अन्तर्गत महानिदेशक द्वारा अनुमोदित प्रक्रिया के अनुसार किए गए निरीक्षण अनुरक्षण, ओवरहालिंग, मरम्मत उपकरण, या परीक्षण के पश्चात् रेडियो उपस्कर भी है, की बाबत अनुरक्षण प्रमाणपत्र जारी करने के लिए महानिदेशक द्वारा अनुमोदित किसी संगठन में नियोजित किसी आवेदक को अपना यह समाधान हो जाने पर कि आवेदक के पास पर्याप्त ज्ञान और अनुभव है तथा उसने सिविल उद्भूत योग्यता अपेक्षाओं से संबंधित महानिदेशक द्वारा यथा विनिर्दिष्ट परीक्षा पास कर ली है अनुमोदन पत्र दे सकेगी ।

(8) सक्षमता प्रमाणपत्र

केन्द्रीय सरकार अपना यह समाधान हो जाने पर कि आवेदक के पास सक्षमता और कुशलता है और उसने महानिदेशक द्वारा विहित परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है किसी वायुयान की उद्भूत योग्यता को प्रभावित करने वाली किसी विशेष प्रक्रिया को कार्य रूप देने के लिए महानिदेशक द्वारा अनुमोदित फॉर्म में नियोजित किसी व्यक्ति को सक्षमता प्रमाणपत्र प्रदान कर सकेगी ।

(9) वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की अनुज्ञप्ति प्रदान करने या उसके विस्तार के लिए आवेदक निम्नलिखित को समाविष्ट करने वाले परीक्षण उत्तीर्ण करेगा:—

- (क) लिखित परीक्षा,
- (ख) मौखिक परीक्षा,
- (ग) समुचित व्यवहारिक परीक्षा :

परन्तु भारतीय वायु सेना या भारतीय नौ सेना या भारतीय थल सेना की वायु संहिता विंग के किसी ऐसे व्यक्ति को जो महानिदेशक के समाधानप्रद ऐसा सख्त पेश करता है कि उसके पास आवश्यक अनुभव, सक्षमता और तकनीकी प्रवीणता का स्तर है, केन्द्रीय सरकार इसे उपनियम में निविष्ट परीक्षणों या उनके किसी भाग से छूट दे सकेगी ।

परन्तु यह और कि केन्द्रीय सरकार, आवेदक को उपर विनिर्दिष्ट परीक्षाओं या उसके किसी भाग से उम गतों को अधीन जिनमें वह ठीक समझे, उस दशा में छूट दे सकेगी जब आवेदक के पास वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर की हैसियत में कार्य करने के लिए किसी ऐसे विदेशी राज्य के किसी सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्रदान अनुज्ञप्ति है जो अभिसमय का पक्षकार है ।

(10) जो आवेदक उक्त परीक्षाओं में से किसी में असफल रहता है, उसे समुचित क्षेत्र में जिसकी महानिदेशक उसे सूचना दें, तीन मास का या अन्य ऐसी किसी अवधि का अनिवार्य अनुभव प्राप्त करने के पश्चात् ही पुनः परीक्षाओं में सम्मिलित होने की अनुज्ञा दे दी जाएगी ।

(11) विधिमन्यता :

(क) अनुज्ञप्तियों, जब तक कि वे रद्द या निलंबित न कर दी जाए, उनमें विनिर्दिष्ट अवधि के लिए, प्रत्येक मामले में दो वर्ष की अधिकतम अवधि के अधीन रहते हुए, विधिमन्य बना रहेगी, और आवेदन किए जाने पर 2 वर्ष की अवधि के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा नवीकृत की जा सकेगी, परन्तु यह तब जब कि अनुज्ञप्ति के नवीकरण के लिए आवेदन की तारीख से पूर्ववर्ती दो वर्ष के दौरान, उसका धारक कम से कम कुल छह मास की अवधि तक वैमानिक इंजीनियरी के तन्त्रों पर लगाया गया हो, जो या तो व्यावहारिक अनुरक्षण, या मरम्मत या ओवरहालिंग के रूप में हो अथवा पर्यवेक्षणीय हैसियत में हो या वायुयान के प्रवासक कर्मियों के सदस्य के रूप में हो ।

(ख) ऐसी अनुज्ञप्ति का जो दो वर्ष से अधिक की अवधि तक समाप्त रही है केवल तभी नवीकरण किया जाएगा जब आवेदक ने सिविल उद्भूत योग्यता अपेक्षाओं के संबंध में महानिदेशक द्वारा विहित परीक्षण उत्तीर्ण कर लिए हों ।

(ग) प्राधिकार प्रमाण-पत्र अनुमोदन और सक्षमता प्रमाणपत्र छह मास से अधिक अवधि के लिए विधिमन्य रहेंगे जब तक कि उन्हें रद्द या निलंबित न कर दिया जाए और केन्द्रीय सरकार उनका और आगे छह मास तक विस्तार कर सकेगी परन्तु तब जब आवेदक पूर्ववर्ती छह महीनों में दो मास तक लगातार उस काम में लगा रहा है ।

(12) किसी विशिष्ट प्रवर्ग में अनुज्ञप्त वायुयान अनुरक्षण इंजीनियर, उन नियम (13) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, उस प्रवर्ग की बाबत जिसमें वह अनुज्ञप्ति धारित किए हुए है, उन नियम (5) में विनिर्दिष्ट विषयों में कार्य करने के लिए सक्षम होगा ।

(13) इस नियम के अधीन प्रदान की गई प्रत्येक अनुज्ञप्ति में उस वायुयान या वायुयान के उस प्रकार या उन प्रकारों का तथा वैमानिकी इंजनों, उपकरणों, उपसाधनों या उपस्कर का, जिनकी संभाल करने में अनुज्ञप्तिधारक सक्षम है, विनिर्देश होगा और उसमें वे निर्बन्धन भी हो सकेंगे जो काम के किसी विशिष्ट वर्ग के संबंध में कार्य करने की उसकी क्षमता की परिसीमा करें, और केन्द्रीय सरकार किसी भी समय ऐसे विनिर्देशों या निर्बन्धनों में परिवर्तन कर सकेगी ।

(14) नियम 19 के उप नियम (3) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, केन्द्रीय सरकार, ऐसी जांच के पश्चात् जैसी वह ठीक समझे, और सुनवाई का सुविशुद्ध अवसर देने के पश्चात् इस नियम के अधीन प्रदान की गई किसी अनुज्ञप्ति प्राधिकार प्रमाणपत्र, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाणपत्र को तब रद्द निलंबित या पृष्ठांकित कर सकेगी जब उसका समाधान हो जाता है कि:—

(क) धारक ने ऐसा कोई काम किया है या कोई प्रमाण-पत्र ऐसे किसी काम के बारे में दिया है जो सावधानी से या सक्षम रीति से संपादित नहीं किया गया है ; या

(ख) धारक ने ऐसे किसी विषय के बारे में, जिसके संबंध में कार्य करने के लिए वह अनुज्ञप्ति नहीं है, किसी प्रमाण-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं ; या

(ग) किसी अन्य कारण से यह अवांछनीय है कि धारक इस नियम के अधीन अनुज्ञप्त अपने विषयाधिकारों का प्रयोग करता रहे ।

(15) केन्द्रीय सरकार, यदि किसी कारण से ऐसा करना वांछनीय समझे तो, अनुज्ञप्ति, प्राधिकार प्रमाण-पत्र, अनुमोदन या सक्षमता प्रमाण-पत्र की मंजूरी या नवीकरण रोक सकेगी ।

[मा. सं. एसी—11012/7/90-ए]

पी. के. बतर्जी, संयुक्त सचिव

पाद टिप्पणः—मूल नियम भारत के राजपत्र भाग 1, तारीख 27 मार्च, 1937 का आशुचूना स. 26 तारीख 23 मार्च, 1937 द्वारा प्रकाशित हुए थे।

आद म उनका निम्नालिखित द्वारा संशोधन किया गया :

- (1) का. नि. आ. 1567 तारीख 6 सितम्बर, 1952 ;
- (2) सा. का. नि. तारीख 24 मई, 1957 ;
- (3) सा. का. नि. 772 तारीख 2 जून, 1962 ; और
- (4) सा. का. नि. 1739 तारीख 26 नवम्बर, 1976।

MINISTRY OF CIVIL AVIATION

NOTIFICATION

New Delhi, the 20th November, 1990

G.S.R. 918(E).—The following draft of certain rules further to amend the Aircraft Rules, 1937, which the Central Government proposes to make in exercise of the powers conferred by section 5 of the Aircraft Act, 1934 (22 of 1934), is hereby published as required under section 14 of the said Act, for information of a persons likely to be affected thereby and notice is hereby given that the said draft rules will be taken into consideration after a period of 45 days from the date of which the Gazette copies containing the publication of this notification are made available to the public.

2. Any objections or suggestions which may be received from any person with respect to the said rules before the period specified above will be considered by the Central Government.

DRAFT RULES

1. These rules may be called the Aircraft(—
—Amendment) Rules, 1990.

2. In the Aircraft Rules, 1937, for rule 61, the following rule shall be substituted, namely :—

“61. Licensing of Aircraft Maintenance Engineers

(1) For the purpose of rule 54, the Central Government may grant licences, Authorisations and Approvals to persons to act in the capacity of Aircraft Maintenance Engineers, Authorised or Approved persons and to sign in connection with construction, repair, overhaul and maintenance of aircraft such certificates as may be prescribed by the Director General or required under these Rules.

(2) General Requirements

(A) Every applicant for the issue of Aircraft Maintenance Engineer's licence shall satisfy the following requirements :

- (a) The applicant shall be not less than 21 years of age.
- (b) The applicant must have passed 10+2 examination with Physics and Mathematics or three years diploma in any branch of engineering or degree in any branch of engineering or equivalent examination;
- (c) The applicant shall possess a minimum practical experience of four years in the field of aircraft maintenance engineering.

Provided that the Central Government may grant relaxation with respect to the minimum requirement for engineering graduates, if they appear in Aircraft Maintenance Engineer's licence examination in the relevant categories as under ;

- (i) Engineering graduates holding aeronautical engineering degree by 18 months in the categories of airframe and engines;
- (ii) Engineering graduates holding degree in mechanical and electrical engineering by 12 months;
- (iii) Engineering graduates holding degree in electronics/telecommunications engineering or other allied disciplines by 12 months in the relevant category.

Provided further that the Central Government may grant exemption from general papers to such students of engineering institutions awarding degree in Aeronautical/Mechanical or Electrical/Electronics engineering as have passed during their course papers on Aircraft Rules, general engineering and workshop practices, theory of flights, aircraft structures theory of internal combustion engines, basic electronics, basic communication system electrical systems and aircraft instrument systems, with syllabi approved by Director General of Civil Aviation. Such students may be allowed to appear for type rated licence examination after gaining 24 months practical experience on aircraft/engines/systems of aircraft of all up weight of 5,700 Kg. or above and after 12 months practical experience on aircraft with all up weight below 5,700 Kg.

Provided also that the Central Government may relax the minimum experience requirement by a period of two years for applicants appearing for licence examinations on gliders.

Provided also that for applicants who have satisfactorily completed training in institutes approved by Director General, the Central Government may relax the experience requirements by one year.

(B) Every applicant for the extension of a licence already valid for a particular category, or for addition of another category in his licence, shall possess maintenance experience relevant to the category or type endorsement specified by the Director General in the Civil Airworthiness Requirements.

(3) The categories in respect of which licences for Aircraft Maintenance Engineers may be granted shall be as follows :—

- (a) licences applicable to aircraft but excluding engines (conforming to International Civil Aviation Organization Type II licences)—Category A;
- (b) licences applicable to overhaul of aircraft having maximum all up weight below 5700 kgs. but excluding engines (conforming to International Civil Aviation Organisation Type I licences)—Category B;
- (c) licences applicable to engines (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category C.

- (d) licences applicable to overhaul of pistons, engines with the power rating not exceeding 500 BHP (conforming to International Civil Aviation Organisation Type I licences)—Category D;
- (e) licences applicable to electrical systems (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category E;
- (f) licences applicable to instruments systems including autopilots (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category I;
- (g) licences applicable to radio communication navigation and radar system (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category R;
- (h) licences applicable to avionics systems or aircraft where electrical instruments and radio systems are integrated with the use of advanced computer system and the operation of flying controls is based on fly by wire technology (conforming to International Civil Aviation Organisation Type II licences)—Category V;
- (i) licences applicable to overhaul of instruments, electrical equipment, radio equipment, V. P. propellers and autopilots as installed on aircraft with all up weight below 5700 kgs. (conforming to International Civil Aviation Organisation Type I licences)—Category X.

(4) Notwithstanding anything contained in sub-rule (3) microlight aircrafts may be certified by any Aircraft Maintenance Engineer, holding a licence in category A, category B, category C, category D or category X as the case may be.

(5) The privileges of the various Aircraft Maintenance Engineer's licences shall be as follows :

(a) For licences in categories A, C, E, I, R and V,—

- (i) certification of flight release in respect of aircraft, engine or systems endorsed in the licence in the respective category;
 - (ii) certification in the logbook of inspection, work done under maintenance schedule approved by the Director General, minor repairs approved by the Director General, modifications approved by the Director General, and replacements of components parts and inspection thereof in respect of aircraft, engine or systems as the case may be, endorsed in licence in the respective category.
- (b) For licences in categories B, D and X,—
- (i) certification of overhaul, repairs, modifications, tests or replacements effected in accordance with the procedures and techniques approved by the Director

General, in respect of Aircraft, engines, instruments, equipment or endorsed in the licence in the respective category;

- (ii) certification of the construction of components and parts fabricated in accordance with drawings approved by the Director General and from materials approved by the Director General and obtained from sources approved by the Director General unless specifically excluded in the licence.

(6) Issue of Authorisation.

The Central Government may grant Authorisation to the holder of an Aircraft Maintenance Engineer's Licence to issue a certificate of maintenance or a certificate of flight release or of both, in respect of any new aircraft, engine system or items of equipment which have been brought into India and which are not within the scope of his licence.

Provided that no such approval shall be granted unless,—

- (i) the Central Government is satisfied that such holder has sufficient training and experience, and
- (ii) such holder has passed such examination and furnished such evidence specified by the Director General in the Civil Airworthiness Requirements.

(7) Issue of Approvals.

The Central Government may grant approval to an applicant employed in an organisation approved by the Director General to issue a certificate of maintenance in respect of an aircraft, engine, system component, instrument, accessory or item of equipment including radio equipment after inspection, maintenance, overhaul, repair, modification or test performed in accordance with the procedures approved by the Director General upon being satisfied that the applicant has sufficient knowledge, experience and has passed such examinations as specified by Director General in the Civil Airworthiness Requirements.

(8) Certificate of Competency.

The Central Government may grant a Certificate of competency to an applicant employed in a firm approved by Director General to perform specialized processes which may affect the airworthiness of an aircraft, upon being satisfied that the applicant has competency and skill and has passed such examinations prescribed by Director General.

(9) An applicant for grant or extension to an aircraft maintenance engineers licence shall undergo tests which may consist of :

- (a) written examination,
- (b) oral examination,
- (c) approval practical test.

Provided that any person from Indian Air Force or Indian Navy or Air Operational Wing of Indian Army who produces evidence to the satisfactions of the

Director General that he possesses necessary experience, competency and standard of technical proficiency, may be exempted by the Central Government from any of the tests or part thereof referred to in this sub rule.

Provided further that the Central Government may subject to such conditions as it may deem fit, exempt any applicant from any of the tests or part thereof referred above if the applicant holds a licence granted by a competent authority of a foreign state party to the convention to act in the capacity of Aircraft Maintenance Engineer.

(10) An applicant who fails in any of the above tests shall be permitted to appear again for such tests only after acquiring additional experience of three months or such other period in the appropriate field as may be intimated to the applicant by the Director General.

(11) Validity.

- (a) Unless cancelled or suspended, licences shall be valid for the period specified therein, subject to a maximum period of 2 years in each case, and may thereafter be renewed by the Central Government for another 2 years on application provided that during 2 years preceding the date of application for the renewal of the licence the holder has been engaged or a period totaling at least six months in aeronautical engineering either in practical maintenance or repair or overhaul or in a supervisory capacity or as a member of operating crew of an aircraft.
- (b) licence which has remained expired for a period in excess of two years shall be renewed only after the applicant has passed such tests as prescribed by the Director General in the Civil Airworthiness Requirements.
- (c) Authorisations, approvals and certificates of competency shall remain valid, unless cancelled or suspended, for a period not exceeding 6 months and may be extended by the Central Government for a further period of 6 months provided the applicant has been continuously engaged in the performance of the task for two months within the preceding six months.

(12) An Aircraft Maintenance Engineer licensed in a particular category shall, subject to the provisions

of sub rule (13), be competent to deal with the matters specified in sub rule (5) in respect of the category of licence which he holds.

(13) Every licence granted under this rule shall specify the type or types of aircraft, aero engines, instruments, accessories or equipment which the licensee is competent to deal with, and may contain restrictions limiting his competence to deal with any particular class of work, and the Central Government may at any time vary such specifications or restrictions.

(14) Without prejudice to the provisions of sub-rule (3) of rule 19, the Central Government may after such inquiry as it may deem fit and after giving a reasonable opportunity of being heard, cancel, suspend or endorse any licence, authorisation, approval or certificate of competency granted under this rule where it is satisfied that,—

- (a) the holder has performed work or granted a certificate in respect of work which has not been performed in a careful and competent manner or;
- (b) the holder has signed a certificate in respect of any matter which he is not licensed to deal with, or
- (c) it is undesirable for any other reason that the holder should continue to exercise his privileges granted under this rule.

(15) The Central Government may withhold the grant or renewal of a licence, authorisation, approval or certificate of competence if for any reason it considers it desirable to do so.

[F. No. AV. 11012/7/90-A]

P. K. BANERJI, Jt. Secy.

Foot Note.—The Principal Rules were published vide notification No. V-26 dated the 23rd March, 1937 in the Gazette of India, Part I dated the 27th March, 1937.

Subsequently amended by :

- (i) SRO 1567 dated 6th Sept., 1952;
- (ii) GSR dated 24th May, 1957;
- (iii) GSR 772 dated 2nd June, 1962; and
- (iv) GSR 1739 dated 26th November, 1976.